20—3—67

मूल बात है ही बाप को याद करने की और सृष्टि चक्र को याद करना। अपने उपर नज़र रखनी है कि मेरे में कोई अवगुण तो नहीं है। बच्चों को यह चाहना है कि बाप से हम पूरा वर्सा लेवें।कोई इतनी बातें नहीं समझते हैं तो कोई हर्जा नहीं है।बाप से वर्सा लेना है। पहले2 तो यह निश्चयय होना चाहिए कि बाप आया हुआ है वर्सा देने। बेहद का बाप तो सबका बाप है। बाप ने ही आकर पहले2 ब्र.कु.कु. को रचा है।बाप से वर्सा भी जरूर बच्चों को ही मिलना है। वर्सा भी मिलना है स्वर्ग का। अभी तुम नर्क में हो। बाप वर्सा देते हैं स्वर्ग का।उसके लिए तो हमको पावन जरूर बनना है।बाप डायरैक्शन देते हैं कि मुझे याद करो तो पाप भस्म हो जावे।आशीर्वाद अक्षर भक्तिमार्ग का है। बाप कहते हैं मुझे बुलाते हैं पतित से पावन बनाने के लिए। इसके लिए राजाई देता हूँ तो मुझे याद भी करो। टीचर कोई आशीर्वाद थोड़े ही करेंगे कि तुम पास हो जाओ। कृपा, आशीर्वाद अक्षर भक्तिमार्ग का है। बाप कहते हैं मुझे बुलाते हैं पतित से पावन बनाने के लिए। इसके लिए राजाई देता हूँ तो मुझे याद भी करो। टीचर कोई आशीर्वाद थोड़े ही करेंगे कि तुम पास हो जाओ। कृपा, आशीर्वाद अक्षर तो भक्तिमार्ग के फाल्तू अक्षर हैं। कृपा होते ही नहीं हैं।हर बात में पुरुषार्थ चलता है। सन्यासियों से वर्सा नहीं मिलने का है। वर्सा मिलता ही है हद के बाप से और बेहद के बाप से। तुम जानते हो ,तुमको निश्चय है कि हम बेहद के बाप से पढ़ रहे हैं।आधा कल्प इसी बाप को ही याद किया जाता है। इसमें तो आशीर्वाद वा कृपा की तो कोई बात ही नहीं है। लौकिक बाप तो है ही पतित। यह बाप तो आते ही हैं पतित से पावन बनाने।अब याद करना तो बच्चों का ही काम है ना। याद से ही तमो से सतो बनते हैं।इसमें मेहनत है।मेहनत बिना तो कुछ होता ही नहीं है। बच्चे जो आधा कल्प से देह अभिमानी रहे हैं तो अब उन्हें देही अभिमानी बनाया जाता है।तो कहते हैं चलते—फिरते बाप को याद करो यही है बस मूल तो बात। बाप खुद कहते हैं कि मेहनत सारी इसी में ही है। ज्ञान भी सिर्फ कुछ काम नहीं आता है। योग है तो ज्ञान भी चाहिए। दोनों ही चाहिए।हेल्थ और वेल्थ दोनों ही मिलती है। है तो ज्ञान सहज ही। योग है कठिन। इसलिए पुरुषार्थ हर एक को इसका करना है।यह स्मृति रखनी है। बाबा समझाते हैं कि याद कर नहीं सकते हैं।माया बुद्धि का योग उड़ा देती है। याद में ही अनेक प्रकार के तूफान आते हैं।याद में ही सब बच्चे हैं। कहते भी हैं कि आकर पावन बनाओ। पावन भी बने और फिर ज्ञान भी हो तो बहुत अच्छा है। एक में भी ढीले होंगे तो पद कम होगा। इसकी ही प्रैक्टिस चाहिए।रावण ने देह अभिमानी बनाया है। देही अभिमानी बने बिना और विकार टूटेंगे नहीं। योग में रहने बिना चाल भी कब नहीं सुधरेगी। याद से ही पावन बनेंगे। बुलाते भी पतित—पावन को ही हैं।सन्यासियों को थोड़े ही कहते हैं कि पतित से पावन बनाओ।बाबा सर्विस करने वालों की सराहना तो बहुत ही करते हैं ना। गुप्ता ने बहुत अच्छी सर्विस की है। बाबा के दिल पर चढ़े हैं। सर्विस से ही तो दिल पर चढ़ेंगे ना।याद की यात्रा भी जरूर चाहिए। तब ही सतोप्रधान बनेंगे ना। जितनी सजा जास्ती खावेंगे तो पद भी कम होता जावेगा।पाप भस्म नहीं होते हैं ता सजा बहुत खानी पड़ती है। पद भी कम हो जाता है। इसको ही घाटा कहा जाता है। यह भी तो व्यापार है ना। घाटे में नहीं जाना चाहिए।बाबा तो उन्नति के लिए किस्म2 की बातें सुनाते ही रहते हैं। अब जो करेंगे वो ही पावेंगे। अब है शैतानी राज्य। तुमको तो परिस्तानी बनना है। गुण भी वैसे ही धारण करने हैं। गुडनाइट।